सितंबर अंक 2023

साक्षात्कार

सर्वजीत सिंह
कलाकार आकाशवाणी एवं दूरदर्शन वाराणसी

नमस्कार सर,

नई गूंज के साक्षात्कार मंच पर आपका हार्दिक स्वागत है। नई गूंज पत्रिका में उत्कृष्ट रचनाओं के प्रकाशन ने निरंतर साहित्य में रूचि रखने वाले पाठकों को अभिभूत किया है । लेखन द्वारा समाज को जागृत करने के इस प्रयास से ही नितांत स्पष्ट हो जाता है कि आप कलम की ताकत से पूर्णरूप से परिचित हैं।

नई गूंज पत्रिका के हर अंक में साक्षात्कार कॉलम के जरिए समाज में अपनी विशिष्ट प्रतिभा से योगदान प्रदान करने वाले प्रबुद्ध जनों से भेंट करवाई जाती है।

माननीय हमें हार्दिक प्रसन्नता है, कि आपसे इस महत्त्वपूर्ण मुलाकात के माध्यम से हम अपने पाठकों को साहित्यजगत की अनमोल प्रेरणा प्रदान कर पाएंगे।

समस्त संपादक मंडल की ओर से सादर नमस्कार और अभिनंदन के साथ आपसे वार्ता प्रारंभ करते हैं।

प्रश्न-1. सर, सबसे पहले हम आपका नाम व संप्रति आपका पद परिचय जानना चाहेंगे।

उत्तर-1- प्रियवर ! सर्वप्रथम मैं आपकी सुप्रसिद्ध साहित्यिक ई पत्रिका **"नई गूंज"** के संस्थापक, व्यवस्थापक, उनके कर्मठ सहयोगियों पाठकों सहित ब्रजेश जी आपका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ कि आपने अपनी पत्रिका के अंतस्तल से मुझे जुड़ने का सुअवसर प्रदान किया है।

बंधुवर! मेरा नाम सर्वजीत सिंह है। पर बचपन का नाम बलवंत सिंह हुआ करता था क्योंकि मेरे सगे बड़े भाई का नाम श्री यशवंत सिंह था । 5 वर्ष के बाद मेरा नाम बदल दिया गया और मैं बलवंत से सर्वजीत हो गया। जो मेरे जीवन के हर कदम पर साकार होता गया, जैसा नाम वैसा काम।

प्रश्न-2- सर, आप अपनी प्रारंभिक शिक्षा व परिवार के बारे में बताइए।

उत्तर-2- ब्रजेश जी ! मेरे पिता जी स्व0 रामराज सिंह अंग्रेजों के जमाने में यूनाइटेड प्राविन्सियल पुलिस के मुलजिम हुआ करते थे। जिनकी नियुक्ति पुलिस विभाग में सन 1942 में हुई थी । मेरे परिवार में एक बड़े भाई स्व0 यशवंत सिंह और एक बड़ी बहन श्रीमती कलावती देवी थीं हम लोग केवल तीन की संख्या में थे । बड़े भाई स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत थे जब कि बड़ी बहन एक कुशल गृहिणी थीं । जब मैं केवल 3 वर्ष का था तब पिता जी ने किसी ज्योंतषी से मेरी कुंडली बनवाई थी जिसमें उसने उल्लेख किया था कि बड़ा होने पर यह लड़का राग रंग वाला होगा । जबकि मेरे पिता जी अपने विभाग में जाने माने कुश्ती के

Scanned with OKEN Scanner

पहलवान थे । जो अपने विभाग की ओर से दूर दूर तक कुश्ती लड़ने जाया करते थे। पर मेरी ज्ञान गंगा उनके विचारों के विपरीत दिशा में बह निकली। वह मुझे भी अपनी तरह एक जाना माना पहलवान बनाना चाहते थे ।

ब्रजेश जी! जहाँ तक मैं मानता हूँ कि कला और साहित्य के क्षेत्र में जाने की भविष्यवाणी जो ज्योतिषी ने की थी उसे अक्षरश: सत्य होना था।

प्रश्न-3- सर, आप की साहित्य की ओर यात्रा का प्रारंभ कब हुआ ?

उत्तर-3- छोटे भाई बचपन से ही मेरी पत्र पत्रिकाओं को पढ़ने में काफी रुचि रही । सन 1972 में मैं कक्षा 8 का छात्र हुआ करता था । डीएवी इंटर कालेज बाराबंकी उत्तर प्रदेश में मेरा नामांकन हुआ था । वहाँ की पुलिस लाइन बाराबंकी रेलवे स्टेशन से सटी हुई थी ।

उस जमाने में मुझे 10 पैसे रोजाना जेबखर्च मिला करते थे। जिसे मैं बड़े जतन से इकट्ठा करता था और जैसे ही मेरे पास 60-65 पैसे हो जाते मैं तुरंत रेलवे स्टेशन की ओर दौड़ लगा देता कोई न कोई अपनी लोकप्रिय पत्रिका उठा लाता । महज दो वर्षों में सकड़ों बाल पत्रिकाएँ नंदन, बाल भारती, चंपक, और चन्दा मामा पढ़ डाली । साथ ही जयंत कुशवाहा के क्रांतिकारी उपन्यास क्रांतिदूत, इंतकाम, नासूर, बारूद, कफ़न, फफोले, लाल रेखा, पपीहरा, पारस, परदेशी, पराया, ज़ंजीर, निर्मोही, सरीखे दर्जनों उपन्यास भी पढ़ डाले।

सन 1974 में पिता जी लाइंस इंस्पेक्टर के पद से रिटायर हुए और अपनी मातृभूमि वाराणसी चले आए । फिर मेरी शिक्षा दीक्षा ग्रामीण परिवेश में होने लगी । पर पढ़ाई का जज्बा खतम नहीं हुआ । यद्यपि एकडमिक शिक्षा के प्रारम्भिक दौर में मैं बहुत अच्छा नहीं रहा फिर भी 1979 में जब मैं कक्षा 11 का छात्र हुआ करता था तब मैंने अपनी पहली एकाँकी लिखी **"रक्तद्वीप"** जो कक्षा 8 की संस्कृत की पुस्तक वारवर: नामक पाठ पर आधारित थी। उसी समय मेरी पहली कविता –**"आवारा बादल"** काफी प्रशिद्ध हुई-

कहते हैं लोग पागल, मैं गीत कहाँ से गाऊँ,
जब मैं हूँ इक आवारा, तो तुमको क्या समझाऊँ।
मत निकट चलो मेरे संग में, मैं डगर बनाता जाऊँ,
कहीं चल न पड़ो तुम उन पर, औ मैं दोषी कहलाऊँ।

फिर तो एक के बाद एक लिखने का सिलसिला चल निकला । कविता, कहानी, वार्ता, निबंध, रिपोर्ट, संस्मरण, एकाँकी, नाटक, व्यंग, जीवनी, डायरी के साथ हिन्दी साहित्य की कोई भी विधा मुझसे अछूती नहीं रही ।

प्रश्न-4- सर, आपने आज तक जो भी सफ़लता अपने जीवन में प्राप्त की उसका श्रेय आप किन्हें देना चाहेंगे?

उत्तर- प्रियवर आज तक मैंने जो भी पाया उसमें चराचर का योगदान रहा । मैं अपने को कुछ भी नहीं मानता बस उन सभी लोगों की अनुकंपा मानता हूँ जो आप सरीखे सहृदय हैं । मुझे भी एक कदम चलने का साहस प्रदान करते हैं। वैसे जीवन के प्रथम गुरु तो माता पिता ही हैं जिन्होंने कभी मेरी साहित्यिक व सामाजिक गतिविधियों का विरोध नहीं किया । सदा उनसे प्रोत्साहन ही मिला फिर विद्यालय के गुरुजन जिनमें परमपूज्य श्री नागेशपति त्रिपाठी जी प्रधानाचार्य आदर्श इंटर कालेज माटीगाँव चंदौली की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण रही जिन्होंने मुझ जैसे नाचीज को आप तक पहुचाया।

Scanned with OKEN Scanner

लिखने की प्रेरणा अन्तर्मन से उद्भूत हुई, अखिल भारतीय रंगमंच के नाटकों में बोलने और अभिनय करने की कला अपने नाट्यगुरु आदरणीय श्री मूलचंद विश्वकर्मा जी से सीखी जो **"काशीका आर्ट्स मुगल सराय"** के नाट्य निर्देशक हुआ करते थे साथ ही भारतीय रेल के पायलट भी ।

उन्होंने ही मुझे फरवरी 1990 में नाट्यसंघ इलाहाबाद के आयोजन में 45 दिन लगातार चलने वाले अखिल भारतीय सर्वभाषाई नाट्य महोत्सव में अभिनय के दौरान आकाशवाणी इलाहाबाद के युववाणी प्रभाग से जोड़ा जहाँ के वे पहले से ही नाटक प्रभाग के अनुबंधित कलाकार हुआ करते थे । वहाँ मेरी कविता के प्रथम ध्वनांकन के समय हिन्दी साहित्य के सुप्रसिद्ध नाटककार श्री लक्ष्मी नारायण मिश्र जी (आजमगढ़) का आशीर्वाद मिला जिन्होंने कहा- बेटे यदि साहित्य में अपनी पहचान बनानी है तो कभी भी आकाशवाणी मत छोड़ना । तब से लेकर आज तक आकाशवाणी व दूरदर्शन के कार्यक्रमों मे सहभागिता का सफर अनवरत जारी है ।

प्रश्न-5- सर, आज जहां देखें केवल दौड़ नज़र आ रही है, इस समय हम एक ऐसे दौर में जी रहें हैं कि संवेदनाएं मर चुकी हैं, फिर क्या प्रयास होने चाहिए कि मनुष्य में मनुष्यता जगह ले सके ?

उत्तर-5- बहुत ही सुंदर और सार्थक प्रश्न है आपका ब्रजेश जी ! मनुष्य को मनुष्य बनाए रखना आज के दौर में बहुत ही मुश्किल है पर असंभव नहीं । आज की उपभोक्ता वादी संस्कृति ने भारतीय संस्कृति के सारे प्रतिमान उलट कर रख दिए हैं । यथार्थ आदर्श की छाती पर चढ़ा हुआ है जिसे नीचे उतारने का कोई उपाय नहीं सूझ रहा ।

जब तक आने वाले वाली भावी पीढ़ी को हम यह भान नहीं कराएंगे कि एक न एक दिन तुम भी उसी मुकाम पर खड़े होगे जहाँ आज मैं हूँ तब तक उनके भीतर संवेदना अंकुरित नहीं होगी और यह काम एक दिन में नहीं होगा । आहिस्ते आहिस्ते एक एक कदम एक एक दिन वर्षों लग जाएँगे पर हमें हिम्मत नहीं हारनी है ।

प्रश्न-6- सर, आपके साहित्य संबंधित प्रकाशनों के बारे में बताएं ?

उत्तर-6- बृजेश जी 1990 से आज तक आकाशवाणी और दूरदर्शन से विगत 33 वर्षों में लगभग 200 कविताएँ, बीसों कहानियाँ, दर्जनों वार्ताएं, और पचासों विविध आयामी साहित्यिक रचनाओं का प्रसारण विश्वस्तरीय हो चुका है और अनवरत होता जा रहा है। रही पुस्तकों के प्रकाशन की बात तो अब तक मेरी 16 पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं जब कि 17 प्रकाशन के क्रम में लगी हुई हैं– जिनमें 3 कविता संग्रह 3 कहानी संग्रह 3 व्यंग संग्रह 2 निबंध संग्रह 5 नाट्य संग्रह हैं । जिसमें अभी 31 जुलाई 2023 को मेरा द्वितीय काव्य संग्रह **शंखनाद** अखिल भारतीय साहित्य सृजन मंच खगड़िया बिहार प्रांत द्वारा साहित्य गौरव के रजत सम्मान से सम्मानित किया गया है।

प्रश्न-7. सर,आज के युग में साहित्य की ओर लोगों का रुझान कम होता जा रहा है, इसका एक कारण यह भी है लोगों की यह सोच बन गई है कि साहित्य लेखन से आजीविका नहीं चल सकती ? इस विषय पर कुछ प्रकाश डालिए ?

उत्तर-7- आप बिल्कुल सत्य कह रहे हैं ब्रजेश जी साहित्य लेखन से आजीविका नहीं चल सकती। क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण होते हुए भी सैकड़ों वर्षों से सरकार की नज़रों में उपेक्षित रहा उसने साहित्यकारों की माली हालत पर कोई ध्यान नहीं दिया । उन्हें किसी प्रकार का कोई नियमित आर्थिक संबल प्रदान नहीं किया गया ।

पहले की उक्ति हुआ करती थी –

पढ़ोगे लिखोगे होगे नवाब, खेलोगे कूदोगे होगे खराब ।

पर आज के वर्तमान सरकार का मोटो ठीक इसके विपरीत है –

Scanned with OKEN Scanner

पढ़ोगे लिखोगे होगे खराब, खेलोगे कूदोगे होगे नवाब ।

जिसमें नेम भी होगा, फेम भी, और मनी भी । इसीलिए तो खिलाड़ियों की उन्नति हेतु अरबों अरब रूपए पानी की तरह बहाए जा रहे हैं । जो एक एक मैच व प्रातियोगिता में करोड़ों रूपए कमा रहे हैं पर साहित्य के लिए सरकार का योगदान इसका सतांश भी नहीं है ।

प्रश्न-8- सर, आप को अपनी कौन सी रचना सर्वाधिक पसंद है और क्यों?

उत्तर-8- ब्रजेश जी वैसे तो रचनाकर की हर रचना उसके लिए अज़ीज होती है पर कुछ प्रतिनिधि रचनाएँ बन जाती हैं- जैसे काव्य में **"मेंढक की आत्महत्या"** जो आज के नारी सशक्तीकरण का ज्वलंत उदाहरण है। पारिवारिक सत्ता की बागडोर पुरुष के हाथों से सरक कर स्त्री के हाथों में समा गई है। आज का पुरुष किस कदर लाचार हो गया है यही कविता का मूल तत्व है । वह अपनी स्त्री से इस तरह से परेशान है कि उसे आत्महत्या के अतिरिक्त कोई दूसरा रास्ता सुझाई ही नहीं देता। मेढक पुरुष का प्रतीक है और मेढकी उसकी पत्नी। जो आज के समाज की घर -घर की कहानी है ।

प्रश्न-9- सर, आज के युवा वर्ग को आप कौन से महत्त्वपूर्ण सुझाव देना चाहेंगे, या क्या संदेश देना चाहेंगे जो उनके मार्ग को प्रशस्त करे। आपके आसान मुश्किल अनुभवों को पाठकों से साझा करना चाहेंगे तो निश्चित ही आपसे रूबरू भेंट की प्रसन्नता मिलेगी।

उत्तर-9- ब्रजेश जी आज का युवा वर्ग दिग्भ्रमित है वह एक ऐसे चौराहे पर खड़ा है जिसे आगे बढ़ाने का रास्ता ही नहीं सुझाई दे रहा। अधिकांश छात्रों को स्नातक करने तक पता ही नहीं है कि आगे उन्हें क्या करना है। यह उनकी कमी नहीं बल्कि शिक्षण संस्थानों की कमी है जहां अध्ययन करने वाले छात्रों को बताया ही नहीं जाता कि वह अध्ययन के लिए कौन सा वर्ग चुनें जिससे आगे चलकर उन्हें रोजी रोटी कमाने में सहूलियत हो सके।

अधिकांश अभिभावकों के विचार में केवल दो ही लक्ष्य होते हैं मेरा पुत्र या तो इंजीनियर बन जाए या डॉक्टर । इसके अलावा कुछ नहीं । जबकि छात्रों को आगे बढ़ने के लिए सैकड़ों रास्ते हैं जीवन के हर क्षेत्र में कला में, विज्ञान में, कृषि में, स्वास्थ्य में, बागवानी में, चिकत्सा में, साहित्य में, संगीत में, अभिनय में, लेखन में, पेंटिंग में आदि आदि बहुत सारे विषय हैं जिसका भरपूर अध्ययन कर नेम फेम और मनी कमाई जा सकती है ।

प्रश्न-10- सर, आपके द्वारा "साहित्य सुरभि" पत्रिका का संचालन किया जा रहा है, जिसके लिए हम आपको शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं क्योंकि कलम की ताकत यानि अच्छे विचारों की शक्ति का प्रवाह करके आप भारत के उज्ज्वल भविष्य में अपना सहयोग प्रदान कर रहे हैं। सर, आप साहित्य सुरभि पत्रिका के बारे में कुछ हमारे पाठकों को बताएं ।

उत्तर-10- ब्रजेश जी आप के इस प्रश्न के लिए आपका बहुत बहुत आभार। साहित्य सुरभि पत्रिका का जन्म आज से लगभग तीन वर्ष पहले उत्तर प्रदेश के बहुत छोटे से जिले चंदौली जो कभी वाराणसी जनपद की पूर्वी तहसील हुआ करती थी वहाँ के कुछ साहित्यिक मनीषियों की आपसी मंत्रणा से अस्तित्व में आई जिसमें एक के बाद क्षेत्रीय रचनाकारों साहित्यकारों के साथ कई प्रदेशों के साहित्यकार जुड़ते चले गए । यहाँ तक कि इसकी सुरभि हमारे युवा रचनाकार मनीष श्रीवास्तव जी की रचना के साथ जकार्ता तक पहुँच गई । आज हमारी पत्रिका के पाठकों व लेखकों की संख्या हजारों के पार है ।

आपकी पत्रिका साहित्य सुरभि का भारतीय सरकार द्वारा रजिस्ट्रेशन हो चुका है और इसके नाम में थोड़ा सा बदलाव हुआ है अब आपकी यह पत्रिका साहित्य जागृति हो गई है । जिसमें प्रकाशन के लिए देश भर के साहित्यकारों से रचनाएँ आमंत्रित होती रहती है। दुर्भाग्य है कि हम उन्हें कोई पारिश्रमिक नहीं दे पा रहे क्योंकि इसे सरकार या किसी चैरिटी द्वारा किसी प्रकार की कोई आर्थिक सहायता प्राप्त नहीं होती।

Scanned with OKEN Scanner

पत्रिकाओं का निर्माण आपसी आर्थिक सहयोग से होता है। सहयोगियों को हार्डकॉपी या तो व्यक्तिगत सम्पर्क से या पंजीकृत डाक से प्रेषित की जाती हैं । शेष महानुभावों को हर अंक का पीडीएफ उनके व्हाट्सऐप नंबर पर प्रेषित कर दिया जाता है। पत्रिका का ईमेल आई डी है-

sahityasurabhi,chandauli@gmail.com और व्हाट्सऐप 9616585519

प्रश्न-11- सर, साहित्य सेवा के अतिरिक्त सामाजिक सेवाओं, शिक्षा व समाज कल्याण के कार्यों में भी आपकी सक्रिय भागीदारी रही है, इस पर कुछ प्रकाश डालें।

उत्तर-11- जी ब्रजेश जी । साहित्यसेवा स्वांत: सुखाय के लिए होती है। जिसके संदर्भ में समाज से किसी प्रकार की अपेक्षा नहीं की जाती। इसके अतिरिक्त सामाजिक सेवाओं के क्षेत्र में भूले भटके लोगों को उनके आवास तक सुरक्षित पहुँचाना, दीन दुखियों को गरीबों को अपनी सामर्थ्यानुसार आर्थिक व अपेक्षित सहयोग प्रदान करना, शिक्षा के उन्नयन हेतु साहित्यिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक, व खेलकूद की प्रतियोगिताओं के आयोजन करना, स्वास्थ्य के कार्यक्रमों का आयोजन व उनमें सहभाग करने में भी मेरी काफी रुची रही है ।

प्रश्न-12- सर, आज के युवा बहुत अधीर और चिंतित हो गए हैं। ज्यादातर उन्हें अपने कार्यों के प्रति उतना मजबूत विश्वास नहीं होता जितना कि होना चाहिए इसलिये वे जरा सी रुकावटों से मार्ग बदल लेते हैं। हम चाहेंगे सर, आप के प्रोत्साहन भरे शब्दों से एक नई ऊर्जा उनमें जन्म ले जो अनवरत चले, जैसे कि आपने एक मार्ग का निर्माण स्वयं किया और आज तक आप उस पर चल रहें होंगे।

उत्तर-12- जी ब्रजेश जी । जैसा कि मैंने बताया आज के युवा अपने लक्ष्य के प्रति कृत संकल्प नहीं हैं। क्योंकि उनका कोई लक्ष्य ही नहीं है। जिन्होंने अपने लक्षय निर्धारित कर लिए हैं उन्हें उनकी मंजिल या तो मिल चुकी है या मिल जाएगी । क्योंकि एक एक कहावत है ना-

रसरी आवत जात ते, सिल पर परत निशान,

जिस तरह कुएं की जगत के पत्थर पर बार बार रस्सी के आने जाने से रस्सी की रगड़ द्वारा गहरा निशान बन जाता है उसी प्रकार लक्ष्य निर्धारित कर लगातार अभ्यास करने से लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है । मेरा आज की युवा पीढ़ी से आग्रह है कि सबसे पहले वह अपनी रुचि के अनुसार अपने जीवन का कार्य क्षेत्र निर्धारित करें और उस पर दिन रात रगड़ करने के लिए जी जान जे जुट जाएँ तभी जीवन को खुशहाल बनाया जा सकता है ।

प्रश्न-13- सर, आप अपने जीवन के अविस्मरणीय पलों के बारे में कुछ बताना चाहेंगे ।

उत्तर-13- ब्रजेश जी जैसा कि मैं पहले ही आपको बता चुका हूँ कि मैं एकेडमिक शिक्षा में बहुत अच्छा नहीं रहा । 1974-75 दो वर्षों तक हाईस्कूल की उत्तर प्रदेश बोर्ड की परीक्षा में असफल रहा, पढ़ाई मैंने छोड़ दी ।1975 की जुलाई में मेरी भतीजी मेरे पास आई और बोली चाचा जी! अपनी हाईस्कूल की किताबें कापियाँ मुझे दे दीजिए । अब आप तो पढ़ने लिखने से रहे। मुझे मिल जाएंगी तो नई खरीदना न होगा । मैंने कहा- कैसे तुम जानती हो कि मुझे नहीं पढ़ना लिखना है ? उसने हंसते हुए कहा- अरे चाचा जाने दो ... अब क्या पड़ोगे लिखोगे ? पढ़ाई लिखाई अब आपके बस की बात नहीं है । दूकान डलिया खोल लो, नमक धनिया बेंचों ।

भतीजी की यह बात मेरे हृदय को चीरती हुई मन में समा गई मैंने कहा– मैं अपनी किताब कापी किसी को नहीं दूंगा । मैं फिर पढ़ूँगा ! तुम्हें हाईस्कूल पास होकर दिखा दूंगा उषा बेटी मेरे जीवन में भी प्रकाश है और फिर लक्ष्य प्राप्ति हेतु रात दिन एक कर दिया 12 घंटे का टाइम टेबल घर पर पढ़ने के लिए बनाया । जिस पर अमल करने में ऐसा प्रतीत होता था कि परीक्षा होते होते मैं मैं किसी मानसिक

Scanned with OKEN Scanner

चिकित्सालय में चला जाऊंगा । लेकिन जब परीक्षा के बाद परिणाम आया तो यह देखके सुखद अनभूति हूई कि जिस विषय (गणित) में मैं दो वर्षों से लगातार फेल होता रहा उस विषय में अन्य विषयों की अपेक्षा सर्वाधिक अंक प्राप्त हुए हैं । फिर उसके बाद, किसकी मजाल जो मुझे आगे बढ़ने से रोक दे, स्नातक (भूगोल, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र) परास्नातक (अर्थशास्त्र) पुन: परास्नातक (एम कॉम) और बी0एड0 तक की शिक्षा प्राप्त की । मेरे जीवन का दो ही लक्ष्य रहा कलाकार बनना और शिक्षक बनना, जो ईश्वर की असीम अनुकंपा से और आप सभी के आशीर्वाद से ए श्रेणी का बनकर दिखा दिया ।

संप्रति- अपने गृह जनपद चंदौली के एक प्रतिष्ठित विद्यालय **"आलोक इंटर कालेज"** के इंटर सेक्शन में 63 वर्ष की उम्र के बावजूद वाणिज्य वर्ग का अध्यापन कर रहा हूं । मेरा फेवरेट विषय है- अर्थशास्त्र, लेखाशास्त्र और व्यवसाय प्रबंधन। अब यह आर्थिक मजबूरी नहीं बल्कि एक शौक हो गया है घर परिवार चलाने के लिए दो बेटे हैं जो इतना कमा लते हैं कि-

खुद ना भूखे रह सकें साधु न भूखे जाय ।

धन्यवाद सर!

आपसे यह वार्ता हमारे और हमारे पाठकों के लिए बहुत महत्वपूर्ण रहेगी। आपके शब्द और उनमें छिपी ताकत और विश्वास निरन्तर हमारा मार्गदर्शन करते रहेंगे। हम समस्त संपादक की ओर से एक बार फ़िर से आपको आभार प्रकट करते हैं, आपने अपना कीमती समय देकर पाठकों का ज्ञानवर्धन किया। एक बार पुनः आपका बहुत बहुत धन्यवाद ।

संपादक

(नई गूंज)

डॉ . शिवा धमेजा

धन्यवाद

Scanned with OKEN Scanner